भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVII अंक–18 30 सितम्बर, 2022

बिन सत्संग बिबेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।
सतसंगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला।

सत्संग के बिना विवेक नहीं होता और श्रीराम जी की कृपा के बिना वह सत्संग सहज में मिलता नहीं। सत्संगति आनन्द और कल्याण की जड़ है। सत्संग की सिद्धि (प्राप्ति) ही फल है और सब साधन तो फूल हैं। रामचरितमानस (बालकांड)

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/73999 दिनांक 14.9.2021 के अनुसार **प्रो. तन्मोय चक्रबर्ती** ने 8.9.2022 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–13ए2 में सह प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/75167 दिनांक 12.9.2022 के अनुसार **डॉ. प्रीतम बरी** ने 9.9.2022 से संस्थान के आटोमोटिव अनुसंधान एवं ट्राइबोलॉजी केन्द्र (कार्ट) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/75152 दिनांक 12.9.2022 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) चिन्मयी सेठी** ने 9.9.2022 से संस्थान के कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/77013 दिनांक 22.9.2022 के अनुसार **प्रो. (सुश्री) तनु मलिक** ने 19.9.2022 से संस्थान के कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2022/78629 दिनांक 22.9.2022 के अनुसार **श्री पंकज प्रसाद** ने 10.8.2022 से संस्थान के लेखा अनुभाग में सहायक कुलसचिव के रूप में सातवें वेतन आयोग के लेवल–10 मे कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2022/75911 दिनांक 14.9.2022 के अनुसार **सुश्री रिजवाना** ने 7.9.2022 से संस्थान के निर्माण अनुभाग (लेखा) में कनिष्ठ सहायक (लेखा) के रूप में सातवें वेतन आयोग के लेवल–3 में कार्यभार ग्रहण किया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2022/68064दिनांक 26.08.2022 के अनुसार **डॉ. सुनील कुमार,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (अन्तरविद्याशाखायी अनुसंधान स्कूल) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 30.08.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. सुनील कुमार को 30.08.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2022/78729 दिनांक 23.09.2022 के अनुसार **प्रो. राजीव बासु मलिक,** प्रोफेसर (सिविल इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 27.10.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः प्रो. राजीव बासु मलिक को 27.10.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया जाएगा।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/U-4/77185 दिनांक 26.09.2022 के अनुसार **डॉ. प्रियातोष महिष,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (विद्युत इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 17.10.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. प्रियातोष महिष को 17.10.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया जाएगा।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/U-3/2022/63887 दिनांक 08.08.2022 के अनुसार **डॉ. अरुणाभा बनर्जी,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (परिवहन अनुसंधान चोट रोकथाम केन्द्र (TRIPC)) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 31.08.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. अरुणाभा बनर्जी को 31.08.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 30 सितम्बर, 2022 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

डॉ. लीला धर काला (26094), वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग

डॉ. लीला धर काला ने 26 अगस्त, 1985 को संस्थान में कनिष्ठ तकनीकी सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 सितम्बर, 1993 को आर.सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको वरिष्ठ तकनीकी सहायक के रूप में चयनित किया गया। 1 नवम्बर, 2006 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया तथा 27 दिसम्बर, 2014 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत उन्नयन दिया गया। आपको 1998 में विभागीय स्तर पर एप्लाइड यूनिवर्सिटी आकन जर्मनी में कार्य करने के लिए नामित किया गया। आपने अपनी पीएच. डी. उपाधि मकैनिकल इंजीनियरिंग विभाग आई.आई.टी. दिल्ली से 2020 में की। विज्ञान प्रसार के लिए कार्य करते हुए आपने डी.एस.टी. द्वारा प्रकाशित इंडियन जर्नल ऑफ साइन्स कम्यूनिकेशन का 9 वर्षों तक सह–सम्पादन भी किया। हिन्दी के प्रति आपकी विशेष रुचि रही जिस कारण आप हिन्दी कक्ष की विभिन्न गतिविधियों से जुड़े रहे। सौम्य एवं मृदु स्वभाव के डॉ. लीला धर काला एक कर्मठ एवं मेहनती वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक रहे हैं।

श्रीमती आशा राज (25447), कनिष्ठ अधीक्षक, स्थापना अनुभाग–I

श्रीमती आशा राज ने 6 सितम्बर, 1982 को संस्थान में अवर श्रेणी लिपिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अक्टूबर, 1990 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको प्रवर श्रेणी लिपिक के रूप में पदोन्नत किया गया। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको वरिष्ठ सहायक के रूप में मैप तथा 1 जुलाई, 2004 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 22 जून, 2012 को एम.ए.सी.पी.एस. के अन्तर्गत उन्नयन दिया गया। श्रीमती आशा राज एक योग्य एवं कर्तव्यपरायण कनिष्ठ अधीक्षक रही हैं।

श्री बिजेन्द्र सिंह रावत (27188), कनिष्ठ सहायक, प्रबन्ध अध्ययन विभाग

श्री बिजेन्द्र सिंह रावत ने 2 जनवरी, 1987 को संस्थान में अटेन्डेन्ट के रूप में 800-1150/-रु. के वेतनमान में कार्यभार ग्रहण किया था। 2 जनवरी, 1995 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको 950-1400/3050-4590 रु. के वेतनमान में चयनित किया गया। 1 फरवरी, 2005 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत वेतनमान 4000-6000/- रु. में उन्नयन तथा 1 फरवरी, 2015 को इसी योजना के अन्तर्गत पुनः उन्नयन दिया गया। 23 फरवरी, 2017 को आपको ग्रुप 'डी' से ग्रुप 'सी' में नियोजित किया गया। श्री बिजेन्द्र सिंह रावत एक योग्य एवं कर्मठ कनिष्ठ सहायक रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके एवं उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

हिंदी पखवाड़ा–2022 सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 14–29 सितम्बर, 2022 तक किया गया। इसी क्रम में हिंदी पखवाड़े के शुभारम्भ में 14 सितम्बर, 2022 को **''राष्ट्रीय विकास एवं भारतीय भाषाओं''** विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. के.के.पंत, संकायाध्यक्ष (संकाय) द्वारा की गई। इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता के रूप में **डॉ. प्रेम पाल शर्मा** (प्रसिद्ध लेखक व पूर्व संयुक्त सचिव, रेल मंत्रालय) को आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला के प्रारंभ में **डॉ. नीरज चौरसिया (अध्यक्ष, हिंदी कक्ष)** ने हिंदी दिवस की बधाई देते हुए कार्यशाला की रूपरेखा व पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। **प्रो. के. के. पंत, संकायाध्यक्ष (संकाय)** ने सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुये कहा कि हिंदी भाषा में ज्ञान अर्जित करके भी जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है। विश्व स्तर पर हिंदी को उसका दर्जा प्राप्त हो इसके लिए केवल 14 सितम्बर को ही नहीं अपितु सभी दिन हिंदी के हों। आपने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार इंजीनियरी की किताबों को हिंदी भाषा में परिवर्तित करने के प्रयास की ओर कार्य किया जा सकता है। जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग इसका ज्ञान हिंदी भाषा में अर्जित कर सके। **डॉ. दीपिका भास्कर, कुलसचिव** ने हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी और हिंदी कक्ष के निरंतर प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी व कर्मचारी भी हिंदी में अधिक से अधिक काम करने का प्रयास करें। हिंदी कक्ष के द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित की जा रही अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों से आपने अनुरोध किया। **डॉ. प्रेम पाल शर्मा** ने ''राष्ट्रीय विकास एवं भारतीय भाषाओं'' पर विस्तार से चर्चा की। आपने कहा कि भाषा का सहज प्रयोग किया जाना चाहिए। शिक्षा वह है जो व्यक्ति में आत्मविश्वास जागृत करती है। लगभग 35 प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ कार्यशाला में भाग लिया तथा महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की। कार्यशाला के अंत में डॉ. चौरसिया ने आमंत्रित वक्ता को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा एक पुस्तक उपहार रूप में प्रदान की।

19 सितम्बर, 2022 को संस्थान में ग्रुप 'बी' सदस्यों के लिए **'जलवायु परिवर्तन प्रभाव व समाधान'** तथा ग्रुप 'सी' स्टाफ सदस्यों के लिए **'आर्गेनिक खेती आवश्यकता एवं संभावना'** विषय पर **हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। इसमें 17 सदस्यों ने

भाग लिया। ग्रुप 'बी' स्टाफ सदस्यों के लिए आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार **श्री देवेन्द्र सिंह** (कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, भौतिकी विभाग) ने, द्वितीय पुरस्कार **श्री रजनीश अग्रवाल** (कनिष्ठ लेखा अधिकारी, लेखा परीक्षा अनुभाग) ने एवं तृतीय पुरस्कार **सुश्री गुंजन मिश्रा** (वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक, केंद्रीय पुस्तकालय) ने प्राप्त किया। ग्रुप 'सी' स्टाफ सदस्यों के लिए आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार **श्री हरिओम कुमार** (वरिष्ठ सहायक, भंडार एवं क्रय अनुभाग) ने, द्वितीय पुरस्कार **श्री चेतन कुमार गौड़** (कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग) ने, तृतीय पुरस्कार **सुश्री पूनम बाला नेगी** (वरिष्ठ सहायक, शैक्षिक अनुभाग) ने प्राप्त किया। 21 सितम्बर, 2022 को संस्थान में ग्रुप 'बी' तथा ग्रुप 'सी' स्टाफ सदस्यों के लिए **'हिंदी टिप्पणी एवं प्रारूपण प्रतियोगिता'** का आयोजन किया गया। इसमें 11 सदस्यों ने भाग लिया। इसमें प्रथम पुरस्कार **सुश्री मेघा लखमेरा** (कनिष्ठ अधीक्षक, शैक्षिक अनुभाग) ने, द्वितीय पुरस्कार **श्री ललित कपूर** (वरिष्ठ सहायक, नीति एवं योजना कार्यालय) ने एवं तृतीय पुरस्कार **श्री दिनेश कुमार** (वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग) ने प्राप्त किया। 22 सितम्बर, 2022 को संस्थान में ग्रुप 'बी' तथा ग्रुप 'सी' स्टाफ सदस्यों के लिए **'राजभाषा प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता'** का आयोजन किया गया। इसमें 14 सदस्यों ने भाग लिया। इसमें प्रथम पुरस्कार **श्री प्रकाश शर्मा** (वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, रसायनिक इंजीनियरी विभाग) ने, द्वितीय पुरस्कार **सुश्री हेमा कुमारी** (कनिष्ठ अधीक्षक, स्थापना अनुभाग–II) ने एवं तृतीय पुरस्कार **श्री आलोक प्रताप यादव** (तकनीकी अधीक्षक, रसायन विज्ञान विभाग) को प्रदान किया गया। 29 सितम्बर, 2022 को संस्थान में स्टाफ सदस्यों और विद्यार्थीगण के लिए **'स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता'** का आयोजन किया गया। इसमें 08 स्टाफ सदस्यों एवं 09 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमें स्टाफ सदस्यों में प्रथम पुरस्कार **श्री भाग्यवर्धन** (वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, केंद्रीय कार्यशाला) ने, द्वितीय पुरस्कार **श्रीमती अनीता मेहन** (अनुसंधान एवं विकास एकक) ने एवं तृतीय पुरस्कार **श्री सुनिल कुमार** (कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, विद्युत इंजीनियरी विभाग) को प्रदान किया गया तथा विद्यार्थीगण में प्रथम पुरस्कार **सुश्री अनुर्वी मेहरा** (प्रबंध अध्ययन विभाग) ने, द्वितीय पुरस्कार **श्री मणिकान्त राय** (प्रबंध अध्ययन विभाग) ने तथा तृतीय पुरस्कार **श्री विवेक कुमार** (विद्युत इंजीनियरी विभाग) को प्रदान किया गया।

29 सिंतबर, 2022 को संस्थान के सीनेट रूम में **हिंदी समारोह** का आयोजन किया गया। इस अवसर पर लगभग 100 स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों ने भागीदारी की। इस समारोह की अध्यक्षता संस्थान निदेशक प्रो. रंगन बनर्जी ने की। कार्यक्रम की शुरूआत सरस्वती वंदना से की गई। इस अवसर पर डॉ. नीरज चौरसिया, अध्यक्ष, हिंदी कक्ष ने गणमान्य अधिकारियों, स्वरचित कविता के निर्णायक मंडल, कर्मचारियों व विद्यार्थियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती इंद्रमणि द्वारा किया गया। डॉ. नीरज चौरसिया ने पी.पी.टी के माध्यम से वर्ष के दौरान हिंदी कक्ष द्वारा किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा माननीय गृह मंत्री और शिक्षा मंत्री के संदेशों का पाठन किया और साथ ही हिंदी कक्ष के द्वारा प्रकाशित संपर्क और जिज्ञासा (हिंदी विज्ञान जर्नल) अंक के 1 से 35 तक के सभी अंकों का प्रदर्शन किया। संस्थान कुलसचिव डॉ. दीपिका भास्कर जी ने सभी को **'राजभाषा प्रतिज्ञा'** दिलाई। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी हिंदी कक्ष के द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'जिज्ञासा' के 36वें अंक का विमोचन निदेशक महोदय, उप निदेशक (प्रचालन) तथा संपादन मंडल के सदस्यों द्वारा किया गया।

निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी कक्ष अपना कार्य बहुत बेहतर तरीके से कर रहा है। सम्पर्क (पाक्षिक समाचार बुलेटिन) व जिज्ञासा का प्रकाशन सराहनीय है। समय–समय पर मंत्रालय के निर्देशों का पालन करते हुए हिंदी कक्ष द्वारा हिंदी का प्रचार–प्रसार का कार्य बेहतर तरीके से किया जा रहा है। सभी प्रतिभागियों व विजेताओं को शुभकामनायें देते हुए आपने सभी को उनकी जिम्मेदारी से रूबरू कराया और उन्हें सुझाव दिया कि हिंदी को अपने कार्यकालीन कार्यों में अधिक से अधिक प्रयोग में लाएं। निदेशक महोदय प्रो. बनर्जी नें कहा कि संस्थान में हिंदी के विकास की संभावनाओं का पता लगाकर उन्हें बढ़ाने का कार्य करना चाहिए। संस्थान में आने वाले गैर हिंदी भाषी विद्यार्थियों को हिंदी सीखने व हिंदी में पाठ्यक्रम पढ़ने की सुविधा प्रदान करने की दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है ।

डॉ. नीरज चौरसिया, अध्यक्ष हिन्दी कक्ष ने निदेशक महोदय के दिए गए सुझावों के लिए धन्यवाद देते हुये कहा कि हिन्दी कक्ष निश्चित रूप से आपके द्वारा दिये गए सुझावों को अमल में लाने का पूर्ण प्रयास करेगा। उन्होंनें हिंदी समारोह को सफलतापूर्वक संपन्न कराने के लिए संस्थान निदेशक, उप निदेशक (प्रचालन), कुलसचिव, निर्णायक मंडल के सदस्यों, उपस्थित संकाय सदस्यों, सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों व हिंदी कक्ष के सभी स्टाफ सदस्यों का बहुत बहुत धन्यवाद व बधाई दी।

आजादी का अमृत महोत्सव

अहिंसा से शुद्ध कुछ भी नहीं

आठ अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन को 'भारत छोड़ो' के सशक्त नारे के साथ चुनौती दी थी। उन्होंने भारत के लोगों से 'करो या मरो' का ऐतिहासिक आह्वान किया था। भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव रखते हुए उन्होंने जो भाषण दिया था, वह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अहिंसक आंदोलन के अंतिम शंखनाद के रूप में स्थापित हुआ। पढ़िए वह ऐतिहासिक भाषण ....

प्रस्ताव पर चर्चा शुरू करने से पहले मैं दो बातों को साफ–साफ समझाना चाहता हूं और उन बातों को मैं हम सभी के लिए महत्वपूर्ण भी मानता हूं। मैं चाहता हूं कि आप सब उन दो बातों को मेरे नजरिए से ही देखें, क्योंकि यदि आपने उन दो बातों को अपना लिया तो हमेशा आनंदित रहेंगे। कई लोग मुझसे यह पूछते हैं कि क्या मैं वही इंसान हूं, जो वर्ष 1920 में हुआ करता था और क्या मुझमें कोई बदलाव आया है ? मैं जल्द ही आपको इस बात का आश्वासन दिलाऊंगा, कि मैं वही मोहनदास गांधी हूं, जैसा 1920 में था। मैंने आत्मसम्मान को नहीं बदला है। आज भी मैं हिंसा से उतनी ही नफरत करता हूं जितनी उस समय करता था। मेरे वर्तमान प्रस्ताव और पहले के लेख और स्वभाव में कोई विरोधाभास नहीं है। वर्तमान जैसे मौके हर किसी की जिंदगी में नहीं आते, लेकिन कभी–कभी एक–आध की जिंदगी में जरूर आते हैं। मैं चाहता हूं कि आप सभी इस बात को जानें कि अहिंसा से ज्यादा शुद्ध और कुछ नहीं है, इस बात को मैं आज कह रहा हूं और अहिंसा के मार्ग पर चल भी रहा हूं। हमारी कार्यकारी समिति का बनाया हुआ प्रस्ताव भी अहिंसा पर ही आधारित है और हमारे आंदोलन के सभी तत्व भी अहिंसा पर ही आधारित होंगे। यदि आपमें से किसी को भी अहिंसा पर भरोसा नहीं है तो कृपया करके इस प्रस्ताव के लिए वोट न करे।

मैं आज आपको अपनी बात साफ–साफ बताना चाहता हूं। भगवान ने मुझे अहिंसा के रूप में एक मूल्यवान हथियार दिया है। मैं और मेरी अहिंसा ही आज हमारा, रास्ता है। वर्तमान समय में जहां धरती हिंसा की आग में झुलस चुकी है और लोग मुक्ति के लिए रो रहे हैं, मैं भी ईश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान का उपयोग करने में असफल रहा हूं। मैं उनके द्वारा दिए गए इस उपहार को जल्दी समझ नहीं पाया, लेकिन अब मुझे अहिंसा के मार्ग पर चलना ही होगा। हमारी यात्रा ताकत पाने के लिए नहीं बल्कि भारत की स्वतंत्रता की अहिंसात्मक लड़ाई के लिए है। हिंसात्मक यात्रा में तानाशाही की संभावनाएं ज्यादा होती हैं जबकि अहिंसा में तानाशाही के लिए कोई जगह ही नहीं है। एक अहिंसात्मक सैनिक खुद के लिए कोई लोभ नहीं करता, वह केवल देश की स्वतंत्रता के लिए ही लड़ता है। कांग्रेस इस बात को लेकर बेफिक्र है कि स्वतंत्रता के बाद कौन शासन करेगा। स्वतंत्रता के बाद जो भी ताकत आएगी, उसका संबंध भारत की जनता से होगा और भारत की जनता ही यह निश्चित करेगी कि उन्हें यह देश किसे सौंपना है और चुनने के बाद भारत की जनता को भी उसके अनुरूप ही चलना होगा। कांग्रेस सभी समुदायों को एक करना चाहती है, न कि उनमें फूट डालकर विभाजन करना चाहती है। मैं जानता हूं कि अहिंसा परिपूर्ण नहीं है और ये भी जानता हूँ कि हम अहिंसा के विचारों से फिलहाल कोसों दूर है। मुझे पूरा विश्वास है, छोटे–छोटे काम करने से ही बड़े–बड़े कामों को अंजाम दिया जा सकता है। ये सब इसलिए होता है क्योंकि हमारे संघर्षों को देखकर अंततः ईश्वर भी हमारी सहायता करने को तैयार हो जाते हैं। मेरा इस बात पर भरोसा है कि दुनिया के इतिहास में हमसे बढ़कर और किसी देश ने लोकतांत्रिक स्वतंत्रता में पाने के लिए संघर्ष न किया होगा।

जिस लोकतंत्र का मैंने विचार कर रखा है, उसका निर्माण अहिंसा से होगा, जहां हर किसी के पास समान स्वतंत्रता और अधिकार होंगे। हर कोई खुद का शिक्षक होगा और इसी लोकतंत्र के निर्माण के लिए आज मैं आपको आमंत्रित करने आया हूं। एक बार यदि आपने इस बात को समझ लिया तब आप हिंदू और मुस्लिम के भेदभाव को भूल जाएंगे। तब आप भारतीय बनकर खुद का विचार रखेंगे और स्वतंत्रता के संघर्ष में साथ देंगे।

अब प्रश्न ब्रिटिशों के प्रति आपके रवैये का है। मैंने देखा है कि कुछ लोगों में ब्रिटिशों के प्रति नफरत का रवैया है। कुछ लोगों का कहना है कि वे ब्रिटिशों के व्यवहार से चिढ़ चुके हैं।

कुछ लोग ब्रिटिश साम्राज्यवाद और ब्रिटिश लोगों के बीच के अंतर को भूल चुके हैं। उन लोगों के लिए दोनों ही एक समान हैं। उनकी यह घृणा जापानियों को आमंत्रित कर रही है। यह काफी खतरनाक होगा। इसका मतलब है कि वे एक गुलामी की दूसरी गुलामी से अदला–बदली करेंगे। हमें इस भावना को दिल–दिमाग से निकाल देना चाहिए। हमें ब्रिटिश लोगों से नहीं बल्कि उनके साम्राज्यवाद से लड़ना है। मैं जानता हूं कि ब्रिटिश सरकार हमसे हमारी स्वतंत्रता नहीं छीन सकती, लेकिन इसके लिए हमें एकजुट होना होगा। इसके लिए हमें खुद को घृणा से दूर रखना चाहिए। हम हमारे महापुरुषों के बलिदानों को नहीं भूल सकते। खुद के लिए बोलते हुए, मैं कहना चाहूंगा कि मैंने कभी घृणा का अनुभव नहीं किया बल्कि मैं समझता हूं कि मैं ब्रिटिशों के सबसे गहरे मित्रों में से एक हूं। आज उनके अविचलित होने का एक ही कारण है, मेरी गहरी दोस्ती। मेरे दृष्टिकोण से, फिलहाल वे नरक की कगार पर बैठे हुए हैं। यह मेरा कर्तव्य होगा कि मैं उन्हें आने वाले खतरे की चुनौती दूं। इस समय जहां मैं जीवन के सबसे बड़े संघर्ष की शुरुआत कर रहा हूं, मैं नहीं चाहता कि किसी के भी मन में किसी के प्रति घृणा का निर्माण हो।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक–7 अगस्त, 2022

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com